Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY, 2021, VOL-9/45

भारतीय संस्कृति और नई शिक्षा नीति

अशोक कुमार वर्मा

(वाणिज्य प्रवक्ता), चम्पा अग्रवाल इण्टर कॉलेज, मथुरा।

Email Id-ashokkverma325@gmail.com

Paper Received On: 25 MAY 2021

Peer Reviewed On: 30 MAY 2021

Published On: 1 JUNE 2021

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

सर्वप्रथम हमें यह जानना आवश्यक है कि भारतीय संस्कृति क्या है? भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। सच्चे अर्थों में संस्कृति मानव की अमूल्य निधि है। संस्कृति एक व्यवस्था है जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों , अनेकों भौतिक तथा अभौतिक प्रतीकों, परम्पराओं, विचारों, सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को शामिल करते है। संक्षेप में– मानव जीवन के दिन प्रतिदिन के आचार–विचार, जीवन शैली तथा कार्य व्यवहार संस्कृति कहलाती है। **पं0 मदन मोहन मालवीय ने कहा है–"भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता औरउसकी महत्ता तो सम्पूर्ण मानव के तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करने अर्थात वसुधैव कुटुम्बकम की पवित्र भावना में निहित है।"**

सभ्यता और संस्कृति में अन्तर होता है, सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी व दृश्यकला जैसे रुपों का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतम उपलब्धियॉ सम्मिलित हैं। भारतीय संस्कृति आज भी अमिट बनी हुई है– यूनान, मिस्र, रोम सब मिट गए जहां से– बाकी मगर हैअब तक नामो निशां हमारा।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति को समझने के लिए हमें भारत की भाषा, धर्म, सम्प्रदाय, भारतीय समाज, भारतीय पहनावा, भारतीय साहित्य, प्रदर्शनकारी कलाएँ, भारतीय दृश्यकला, भारतीय मनोरंजन और खेल, लोकप्रिय मीडिया, भारतीय दर्शनशास्त्र आदि से भली–भॉति परिचित होना होगा। भारतीय संस्कृति में निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती है–

1. भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है।
2. हजारों वर्ष बाद भी यह संस्कृति अपने मूल स्वरुप में जीवित है।
3. भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता और लचीलापन है जो इसे स्थायित्व प्रदान करता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

4. भारतीय संस्कृति में सहनशीलता और ग्रहणशीलता भी पायी जाती है।
5. भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिता और भौतिकता का अद्भुत समन्वय विद्यमान है।
6. भौगोलिक और सामाजिक रुप से भारत विविधताओं का देश है परन्तु सांस्कृतिक रुप से अनेकता में एकता की भावना बनी रहती है।
7. भारतीय संस्कृति **"वसुधैव कुटुम्बकम"** की भावना पर आधारित व ओतप्रोत है।
8. भारतीय संस्कृति लोकहित और विश्व कल्याण चाहती है।
9. भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण की पक्षधर है।

भारतीय संस्कृति की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए हमें निम्न बातों पर ध्यान देना होगा–

1. अपनी सनातनी धार्मिक परम्पराओं के बारे में जानना,
2. अपनी प्राचीन भाषाओं को बचाने का प्रयास करना,
3. परम्परागत व्यंजन बनाने की विधि अगली पीढ़ी को सौंपना,
4. अपनी कला और तकनीक को दूसरों को शेयर करना,
5. समुदाय और समाज के अन्य सदस्यों के साथ मिलजुल कर रहना,
6. सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व के उत्सवों का आयोजन,
7. अपनी संस्कृति पर गौरवान्वित होना और उसे अपने आचरण में उतारना,

अबतक हमने भारतीय संस्कृति के बारे में जाना, अब हम नई शिक्षा नीति क्या है? उस पर विचार करते है। नई शिक्षा नीति भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित है। इससे पहले स्वतंत्र भारत में शिक्षा की नीतियों पर विचार कर लेते है। कोठारी आयोग (1964–66) ने शिक्षा पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे सन 1968 में लागू किया गया। इस शिक्षा नीति की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित है–

1. शिक्षा राष्ट्रीय महत्व का विषय है।
2. 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, शिक्षकों की योग्यता एवं बेहतर प्रशिक्षण।
3. प्राचीन संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति और विरासत का अनिवार्य हिस्सा है।
4. शिक्षा पर केन्द्रीय बजट का 6 प्रतिशत व्यय हो।
5. माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र का प्रावधान हो।

इसके बाद सन 1986 में नई शिक्षा नीति को अपनाया गया जिसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. असमानताओं को दूर करना– भारतीय महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए शैक्षिक स्तर की बराबरी पर विशेष जोर देना।
2. प्राथमिक स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए आपरेशन ब्लैक बोर्ड लॉच किया गया।
3. इन्दिरा गॉधी राश्टीय मुक्त विश्वविद्यालय के साथ ओपेन यूनीवर्सिटी प्रणाली का विस्तार।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

4. भारत में जमीनी स्तर पर आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महात्मा गॉधी के दर्शन पर आधारित ग्रामीण विश्व विद्यालय के निर्माण की नीति।

सन 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में फिर से संशोधन किया गया। व्यावसायिक, तकनीकी प्रवेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा का आयोजन जैसे अनेक महत्वपूर्ण सुधार किये गये। इसके बाद नई शिक्षा नीति–2020 बनाई गयी जिसकी कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालते है–

1. पूर्व प्राथमिक स्तर पर संज्ञानात्मक विकास।
2. प्राथमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा।
3. माध्यमिक में नवाचारी शिक्षा।
4. उच्च स्तर पर नवीन प्रणाली की स्थापना।

फाउन्डेशन स्टेज–

1. 3 वर्ष से 6 वर्ष के बच्चों को आंगनवाड़ी/बालवाटिका/प्री स्कूल के माध्यम से मुफ्त, सुरक्षित, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा। कक्षा 6 से 8 वर्ष के बच्चों को प्राथमिक विद्यालय कक्षा–1 एवं 2 । इस प्रकार कुल मिलाकर पॉच वर्ष का कोर्स हुआ। यह शिक्षा 5+3+3+4 के पैटर्न पर आधारित है।
2. तीसरी, चौथी और पॉचवीं कक्षा का कुल तीन वर्ष का कोर्स हुआ। प्राथमिक स्तर की इस शिक्षा पर मातृभाषा पर अधिक जोर दिया गया है।
3. छठवीं, सातवीं और आठवीं कक्षा का कुल तीन वर्ष का कोर्स होगा। इसमें गणित, विज्ञान पर जोर देते हुए व्यावसायिक शिक्षा का आरम्भ भी किया जायेगा।
4. कक्षा नवीं, दशवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं के माध्यमिक शिक्षा को चार वर्ष का कोर्स माना गया है। इसमें वैकल्पिक विषय के चुनाव की छूट प्राप्त होगी। ऑब्जेक्टिव और सब्जेक्टिव पैटर्न पर आधारित, वर्ष में दो बार परीक्षा कराने की योजना है।
5. उच्चशिक्षा में एक वर्ष के कोर्स बाद सर्टिफिकेट, दो वर्ष के कोर्स के बाद एडवांस डिप्लोमा सर्टिफिकेट, तीन वर्ष के डिग्री सर्टिफिकेट, चार वर्ष के बाद शोध के साथ स्नातक सर्टिफिकेट देने की योजना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तैयार करने के लिए परामर्श प्रक्रिया का आयोजन किया गया। प्राप्त सुझावों, शिक्षाविदों के अनुभव तथा के0 कस्तूरीरंगन समिति की सिफारिशों के आधार पर वर्तमान सरकार ने व्यापक बदलावों के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी है। समता, गुणवत्ता, वहनीयता तथा जबावदेही के आधार पर निर्मित यह नई शिक्षा नीति सतत विकास के अनुकूल है। इसका उद्देश्य 21वीं शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुकूल स्कूल–कॉलेज की शिक्षा को समग्र लचीला बनाना है, जिससे भारत एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज की स्थापना के साथ वैश्विक महाशक्ति के

रुप में बदल सके। ऐसा देश के छात्रों में निहित अद्वितीय क्षमताओं को विकसित करने से संभव हो सकता है।

इस प्रकार शिक्षा तक सबकी आसान पॅहुच हो सकती है। नई शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कला, संस्कृति और भाषा के माध्यम से मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता की जागृति पर बल दिया गया है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम ही नही बल्कि किसी राष्ट्र के स्वाभिमान तथा प्राचीन संस्कृति की संवाहक भी होती है। नई शिक्षा नीति में इस बात का जोर दिया गया है कि मौलिक विचार अपनी मातृभाषा में ही आते है। भाषाओं में सतत प्रवाह बनाए रखने के लिए गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिन्ट सामग्री की जरुरत होती है। भाषाओं के शब्द भण्डार लगातार अपडेट होने चाहिए। इस हेतु दिए गये मुख्य सुझाव निम्नलिखित है–

1. मूल्य परक शिक्षा के लिए इन्फ्रास्टक्चर को बढ़ाना होगा।
2. सुयोग्य अध्यापकों की नियुक्ति हो।
3. कृषि एवं रोजगारपरक शिक्षा हो।
4. भारतीय भाषा कला व संस्कृति का प्रचार हो।
5. बच्चों में सांस्कृतिक जागरुकता और अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करना।
6. जिस भाषा को प्रासंगिक और जीवन्त बनाना है, उस भाषा में पाठ्यपुस्तक, वीडियो, नाटक, कविता, उपन्यास तथा पत्रिका का प्रकाशन हो।
7. बच्चों में भाषा, संस्कृति और कला के प्रति रुझान पैदा करने के लिए संगीत, कला व शिल्प पर जोर दिया जाय।
8. पारम्परिक ज्ञान को पाठ्यपुस्तक में शामिल किया जाय।
9. कलात्मक संगीत, दर्शन आदि को बढ़ावा दिया जाय।
10. रचनात्मक लेखन की कला विकसित हो।
11. संग्रहालय, पुरातत्व का संरक्षण हो।
12. शैक्षिक संस्थान के छात्रों को पर्यटन कराया जाय।
13. आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं के लिए अकादमी स्थापित की जाय।
14. लुप्तप्रायः, भाषा, कला, संस्कृति को संरक्षित किया जाय।
15. त्रिभाषा सूत्र फार्मूला लागू हो।
16. मातृभाषा, स्थानीय भाषा में शिक्षण हो।
17. संस्कृत भाषा को मुख्यधारा में लाने का प्रयास।
18. भारतीय भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली सामग्री विकसित करने का संकल्प।
19. गणित, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, नाटक, योग आदि को मुख्यधारा से जोड़ा जाय।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

20. शास्त्रीय, आदिवासी, लुप्तप्राय भाषाओं का संरक्षण।

21. बहुभाषा–विज्ञ, अनुवादक, विषय विशेषज्ञ की नियुक्ति।

इस प्रकार नई शिक्षा नीति भारतीय संस्कृति के संवर्धन में अग्रणी भूमिका निभा सकती है। तथा **"नेशन फर्स्ट–कैरेक्टर मस्ट"**, यह सूत्रवाक्य सार्थक होगा।

सन्दर्भ

नई शिक्षा नीति–2020– भारतीय भाशा कला और संस्कृति का प्रचार

Web Desk

नई शिक्षा नीति में भारतीयता और देशी भाशाओं को महत्ता

M.Jagran.Com 08 September 2020

भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित है नई शिक्षा नीति

Jagran 17 August 2020

नई शिक्षा नीति से बनेगा देश आत्मनिर्भर

mention.org 01 September 2020

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language